Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 9, October-2018, ISSN 2230-7540

अरब लहर और अलजज़ीरा का कवरेज

Akhlak Ahmed Usmani*

Research Scholar, Department of Journalism and Mass Communication, Jaynarayan Vyas University, Jodhpur

सारांश – *क़तर से चलने वाले सैटेलाइट टेलीविज़न चैनल अलजज़ीरा की अरब स्प्रिंग के कवरेज में भूमिका संदिग्ध लेकिन महत्वपूर्ण है। जब अरब लहर साल 2010 में अरब से उठी तो अलजज़ीरा ने अपने टेलीविज़न चैनल, वेबसाइट और ट्वीटर पर अरब स्प्रिंग को एक अभियान के तौर पर कवर किया। चैनल में कुछ ऐसी घटनाएं हुईं जिससे चैनल की इस क्रांति में भूमिका को लेकर भी सवाल पैदा हुए। अलजज़ीरा ने अरब स्प्रिंग के शुरू होते ही इसके प्रमुख वादा ख़ानफर को प्रमुख पद से हटा दिया और राजपरिवार के सदस्य और क़तर गैस के प्रमुख शेख़ अहमद को अलजज़ीरा की ज़िम्मेदारी सौंप दी। सीरिया और बहरीन पर अलजज़ीरा की ख़ामोशी के बाद आलोचकों ने महसूस किया कि मिस्र में 2011 के अरब स्प्रिंग के कवरेज में जिस तरह अलजज़ीरा ने चौबीसों घंटे प्रसारण जारी रखा, इसे प्रदर्शनकारियों को जुटने के लिए 'आयोजक' और विरोधियों के भोंपू के तौर पर देखा जाने लगा। अलजज़ीरा ने मिस्र के तीन प्रमुख शहरों क़ाहिरा, सिंकदरिया और सुएज़ में अपने संवाददाता भेजकर हर उस व्यक्ति का इंटरव्यू करने की कोशिश की जिसे तत्कालीन राष्ट्रपति हुस्नी मुबारक का विरोधी समझा जाता था।*

----------X----------

'अरब लहर' यानी 'अरब स्प्रिंग' का मीडिया में कवरेज पत्रकारिता जगत की एक अपूर्व घटना है। किसी क्रांति में न्यू मीडिया की भूमिका और परम्परागत मीडिया पर सोशल मीडिया के प्रभाव को दुनिया ने पहली बार अनुभव किया। अख़बार के मुक़ाबले टेलीविज़न और इसके मुक़ाबले न्यू मीडिया के उत्थान पर अरब स्प्रिंग का दौर बहुत महत्वपूर्ण है। इतिहास की इस महत्वपूर्ण घटना के सात साल बाद भी इसके मीडिया कवरेज और प्रभाव पर शोध जारी है और जानकार मानते हैं कि यह प्रक्रिया जारी रहेगी। इंटरनेट पर सामाजिकता और निजी संचार से आगे सोशल मीडिया के कामयाब और प्रभावी प्रयोग के लिए अरब लहर यानी अरब स्प्रिंग को याद किया जाता रहेगा। ट्यूनिशिया, मिस्र, सीरिया, लीबिया और यमन से लेकर बहरीन तक लोगों ने साबित किया कि जो सत्ताएँ पीढ़ियों तक नहीं बदलतीं, वह कुछ वर्षों में बदल जाती हैं।

अलजज़ीरा का सामान्य परिचय

ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन के अरबी चैनल के बंद होने के बाद वर्ष 1996 में इन लोगों को साथ लेकर क़तर राजपरिवार ने अलजज़ीरा चैनल शुरू किया। बीबीसी ने सऊदी अरब के दबाव में अपना चैनल बंद कर दिया था, वही लोग अलजज़ीरा अरबी के साथ जुड़ गए। अलजज़ीरा ने इसके 10 साल बाद अंग्रेज़ी का चैनल लॉन्च किया जिसे ऑनलाइन देखा जा सकता है। जिस तरह से क़तर ने अलजज़ीरा को कवरेज में स्वतंत्रता दी, अरब जगत ने इससे पहले ऐसा कभी नहीं देखा था। इसका नतीज़ा यह हुआ कि यह जल्द ही अरब जगत में लोकप्रिय हो गया।

साल 2001 में अलजज़ीरा ने काबुल में अपना कार्यालय खोला और तालिबान पर अमेरिकी हमले के बाद अलजज़ीरा के वीडियो को पूर्व के टेलीविज़न चैनलों ने प्रसारित किया। आतंकवादी संगठन अलक़ायदा के प्रतिनिधियों के वीडियो और ऑडियो संदेशों को अलजज़ीरा ने प्रमुखता से प्रसारित किया जिसे कई मीडिया घरानों ने सौजन्य के माध्यम से पुनर्प्रसारित किया। बाद में अमेरिका ने काबुल और बग़दाद में अलजज़ीरा के मुख्यालयों को बॉम्बिंग में उड़ा दिया। अलजज़ीरा ने आरोप लगाया कि ब्रिटेन के एक मंत्री के इशारे पर उसके दो ब्यूरो को उड़ा दिया गया। जिस तरह जॉर्ज बुश ने अलजज़ीरा के प्रति अपनी नाराज़गी जताई, इससे अलजज़ीरा को पूरी दुनिया में एक प्रतिष्ठित मीडिया घराने की छवि बनाने में बहुत मदद की।

अलजज़ीरा का अरब लहर का कवरेज

क़तर से चलने वाले सैटेलाइट टेलीविज़न चैनल अलजज़ीरा की अरब स्प्रिंग के कवरेज में भूमिका संदिग्ध लेकिन

www.ignited.in

महत्वपूर्ण है। जब अरब लहर साल 2010 में अरब से उठी तो अलजज़ीरा ने अपने टेलीविज़न चैनल, वेबसाइट और ट्वीटर पर अरब स्प्रिंग को एक अभियान के तौर पर कवर किया। चैनल में कुछ ऐसी घटनाएं हुईं जिससे चैनल की इस क्रांति में भूमिका को लेकर भी सवाल पैदा हुए। अलजज़ीरा ने अरब स्प्रिंग के शुरू होते ही इसके प्रमुख वादा ख़ानफर को प्रमुख पद से हटा दिया और राजपरिवार के सदस्य और क़तर गैस के प्रमुख शेख़ अहमद को अलजज़ीरा की ज़िम्मेदारी सौंप दी। शेख़ अहमद की नियुक्ति के बाद से ही अलजज़ीरा की रैटिंग गिरने लगी और चैनल पर असंतुलित कवरेज के आरोप लगने लगे।

ट्यूनिशिया और मिस्र में अरब स्प्रिंग पर कवरेज के बाद अलजज़ीरा की लोकप्रियता में बहुत वृद्धि हुई लेकिन चैनल ने जब बहरीन में इसी तरह के प्रदर्शन की ख़बरों को दबाया और सीरिया में अपुष्ट वीडियो को ख़बर के तौर पर चलाया तो चैनल की प्रतिष्ठा बहुत धूमिल हुई। सऊदी अरब और ओमान में होने वाले प्रदर्शनों पर भी अलजज़ीरा ख़ामोश हो गया।

सीरिया और बहरीन पर अलजज़ीरा की ख़ामोशी के बाद आलोचकों ने महसूस किया कि मिस्र में 2011 के अरब स्प्रिंग के कवरेज में जिस तरह अलजज़ीरा ने चौबीसों घंटे प्रसारण जारी रखा, इसे प्रदर्शनकारियों को जुटने के लिए 'आयोजक' और विरोधियों के भोंपू के तौर पर देखा जाने लगा। अलजज़ीरा ने मिस्र के तीन प्रमुख शहरों क़ाहिरा, सिंकदरिया और सुएज़ में अपने संवाददाता भेजकर हर उस व्यक्ति का इंटरव्यू करने की कोशिश की जिसे तत्कालीन राष्ट्रपति हुस्नी मुबारक का विरोधी समझा जाता था। मुबारक की सरकार ने नाइलसैट उपग्रह से अलजज़ीरा को हटा दिया और ट्यूनिशिया की सरकार ने अलजज़ीरा की वेबसाइट अपने देश में बंद करवा दी।

फरवरी 2011 में जब लीबिया में तत्कालीन राष्ट्रपति कर्नल गद्दाफी के विरोध में देश में दंगे होने लगे तो अलजज़ीरा ने ग़द्दाफ़ी के विरोधियों लेकिन दंगाइयों को बहुत कवरेज दिया। मगर जब बहरीन की जनता घरों से बाहर आई और अलजज़ीरा ने सऊदी अरब को ख़ुश रखने के लिए बहरीन के मुद्दे पर पूरी तरह चुप्पी साध ली तो जनता को अलजज़ीरा की असंतुलित और एकतरफा कवरेज से चिढ़ हो गई। अलजज़ीरा अंग्रेज़ी चैनल के पूर्व सम्पादक डेव माराश ने अलजज़ीरा अरबी चैनल के बहरीन के कवरेज पर बहुत उम्दा टिप्पणी की। उन्होंने कहा- "मध्य पूर्व में अलजज़ीरा ने अपने अरबी चैनल पर बहरीन कवरेज से अपने ब्रांड को भारी नुक़सान पहुँचाया जो सऊदी अरब के निर्देश से चला जिसमें सिर्फ़ बहरीनी राजपरिवार के दृष्टिकोण को दिखाया गया।"

इसी तरह यमन की राजधानी सना में भी अलजज़ीरा के दफ्तर को सरकार ने बंद करवा दिया क्योंकि चैनल पर यमन के हालात की ग़लत रिपोर्टिंग का आरोप था। यमन के तत्कालीन सूचना मंत्रालय ने सरकारी चैनल सबा के माध्यम से अपनी रिपोर्ट जारी की और बताया कि इराक़ में जेल में यातना के वीडियो को अलजज़ीरा ने यमन की यातना के दृश्य कहकर ख़बरें प्रसारित कीं। सबा ने यह भी बताया कि 20 सशस्त्र लड़ाकों ने सना में अलजज़ीरा के दफ्तर पर हमला किया और ग़लत रिपोर्टिंग से नाराज़ होकर अलजज़ीरा का कार्यालय बंद करवा दिया। अलजज़ीरा ने लेकिन अपना कवरेज बंद नहीं किया और यमन पर एकतरफ़ा रिपोर्टिंग जारी रखी।

सीरिया, मिस्र, यमन और लीबिया में आक्रामक कवरेज करने वाला अलजज़ीरा पूर्वी सऊदी अरब, बहरीन और ओमान के कवरेज पर एकदम चुप हो गया। अपहरण, हत्या और सेना के अत्याचार के अपुष्ट वीडियो चलाकर अलजज़ीरा ने अपने प्रतिष्ठा को बहुत नुक़सान पहुँचाया। बाद में कई वीडियो के फर्ज़ी होने की बात सामने आई। इसी दौरान चैनल के प्रमुख वादा खफ़नार को हटा दिया गया और शेख़ अहमद की नियुक्ति के बाद यह स्पष्ट हो गया कि अलजज़ीरा क़तर राजपरिवार के राजनीतिक आकांक्षा के हिसाब से कवरेज कर रहा था।

सीरिया के कवरेज में अलजज़ीरा के ब्यूरो चीफ़ हाशिम के इस्तीफ़ा के बाद इस मीडिया घराने की प्रतिष्ठा को गहरा आघात लगा। सीरियन इलेक्ट्रॉनिक आर्मी ने अलजज़ीरा की हैक की गई ईमेल को सार्वजनिक किया जिससे पता चला कि अली हाशिम ने चिंता जताई थी कि जिस रूप में सीरिया में कथित संकट को प्रस्तुत किया जा रहा है, वह चिंता का विषय है। सीरिया में विद्रोहियों या आतंकवादियों के अलजज़ीरा पर लगातार कवरेज से भी मीडिया घराने के राजनीतिक लालसाओं का पता चलता है।

संदर्भ-

ब्रायंट, लीसा, 2016, "सरकोज़ी- क्रिटिकल देट जी-8 सपोर्ट 'अरब स्प्रिंग'"

फिलियू, जीन पियेरे, 2011, "द अरब रिवोल्यूशन: टेन लेसंस फ्रॉम द डेमोक्रेटिक अपराइज़िंग"

गेलविन, जेम्स एल, 2012, "द अरब अपराइज़िंग: व्हाट एवरीवन नीड टू नो?"

रमदान, तारिक़, 2012, "इस्लाम एंड द अरब एवेकनिंग"

मैनहायर, टोबी, 2012, "द अरब स्प्रिंग: रिबेलियन, रिवॉल्यूशन एंड ए न्यू वर्ल्ड ऑर्डर"

सादिकी, लारबी, 2013, "डेमोक्रेटिक ट्रांज़िशन इन द मिडल ईस्ट: अनमेकिंग पॉवर"

याफ़ी, विस्साम, 2012, "इनऐविटेबल डेमोक्रेसी इन द अरब वर्ल्ड: न्यू रियालिटीज़ इन एन एनशिएंट लैंड"

Corresponding Author

Akhlak Ahmed Usmani*

Research Scholar, Department of Journalism and Mass Communication, Jaynarayan Vyas University, Jodhpur

E-mail – usmaniakhlaq@yahoo.com